

## श्री बद्रीनाथ जी की आरती

पवन मंद सुगंध शीतल, हेम मंदिर शोभितम् ।  
निकट गंगा बहत निर्मल, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥

शेष सुमिरन करत निशदिन, धरत ध्यान महेश्वरम् ।  
वेद ब्रह्मा करत स्तुति, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥  
॥ पवन मंद सुगंध शीतल...॥

शक्ति गौरी गणेश शारद, नारद मुनि उच्चारणम् ।  
जोग ध्यान अपार लीला, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥  
॥ पवन मंद सुगंध शीतल...॥

इंद्र चंद्र कुबेर धुनि कर, धूप दीप प्रकाशितम् ।  
सिद्ध मुनिजन करत जय जय, बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥  
॥ पवन मंद सुगंध शीतल...॥

यक्ष किन्नर करत कौतुक, ज्ञान गंधर्व प्रकाशितम् ।  
श्री लक्ष्मी कमला चंवरडोल, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥  
॥ पवन मंद सुगंध शीतल...॥

कैलाश में एक देव निरंजन, शैल शिखर महेश्वरम् ।  
राजयुधिष्ठिर करत स्तुति, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥  
॥ पवन मंद सुगंध शीतल...॥

श्री बद्रीजी के पंच रत्न, पढत पाप विनाशनम् ।  
कोटि तीर्थ भवेत पुण्य, प्राप्यते फलदायकम् ॥  
॥ पवन मंद सुगंध शीतल...॥

पवन मंद सुगंध शीतल, हेम मंदिर शोभितम् ।  
निकट गंगा बहत निर्मल, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥  
॥ इति श्री बद्रीनाथ जी की आरती संपूर्णम् ॥